ब्रह्मकुमारी संस्थान के कार्यक्रम, दिल्ली में सम्बोधन

---

1. दया और करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण के वर्ष के अनावरण पर आज राजधानी दिल्ली में आप सबके बीच उपस्थित होकर असीम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आपने इस वर्ष को उत्कृष्ट मानव मूल्यों, 'दया और करुणा' के लिए समर्पित किया है, मैं आपकी सोच और आपके विचारों की सराहना करता हूँ।

2. दया और करुणा मानव के ऐसे प्रमुख नैतिक मूल्य हैं जो अहंकार और लालच को खत्म करते हैं। मन को सुंदर बनाते हैं और मानव को मानव से जोड़ते हैं। भारतवर्ष में दया और करूणा की प्राचीन काल से ही परंपरा रही है।

3. हमारे महापुरुषों ने क्षमा, दया एवं करुणा को सबसे महान मानवीय गुण बनाया है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, गुरु नानक देव जी और बाबा लेखराज जी, इन सभी महान व्यक्तित्वों ने दया और करुणा पर विशेष ज़ोर दिया और इन्हें मनुष्य का श्रेष्ठ जीवन मूल्य बताया है। जीवमात्र के प्रति करुणा और दयाभाव हमारी संस्कृति के आधार रहे हैं।

4. नैतिकता से युक्त, श्रेष्ठ एवं सम्पूर्ण मानवीय गुणों से युक्त नागरिक एवं सभ्य समाज के निर्माण की दिशा में ब्रह्मकुमारी संस्थान के सदस्य पिछले कई दशकों से कार्यरत हैं।

5. आपने संसार को अध्यात्म और आत्म विकास की महान सीख दी है। आज के ग्लोबल वर्ल्ड में ब्रह्मकुमारीज संस्था ने नैतिक विकास को विशेष महत्व दिया है।

6. अभी कुछ महीनों पहले ही आपने स्वयं पहल करते हुए आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वयं को जोड़ा है। मानव कल्याण के लिए समर्पित संस्था ब्रह्मकुमारीज द्वारा 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान की शुरुआत की गई है।

7. इस अभियान का शुभारंभ हमारे माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा किया गया था। अपने अभियान के अंतर्गत आपने जनकल्याण के कार्यों का विस्तार दिया है, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, आध्यात्म प्रसार सहित जीवन के विविध क्षेत्रों में आप अपने सेवा कार्यों को लेकर गए हैं; यह अत्यंत अनुकरणीय है।

8. सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना की प्रतीक ब्रह्मकुमारीज ने समस्त मानवता को राजयोग का मार्ग दिखाया है जिसके माध्यम से मनुष्य अपनी आंतरिक ऊर्जा को सक्रिय करते हुए स्वयं

को परमात्मा से जोड़ देता है। यह आध्यात्मिक उन्नति हमारे युवा जन और प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी हो सकती है।

9. प्रिय मित्रों, ध्यान और आध्यात्मिक जीवन का अभ्यास व्यक्ति को अहंकार, लोभ, क्रोध और मोह से दूर करता है। यह व्यक्ति में आत्म विश्वास और एकाग्रता का भी विकास करता है। आप प्रोफेशनल हैं, आप विद्यार्थी हैं, गृहिणी हैं या आप किसी भी क्षेत्र में हैं, मैं समझता हूँ कि सभी को ध्यान के माध्यम से अध्यात्म विकास पर केंद्रित होना चाहिए।

अध्यात्म हमारी प्राचीन जीवन शैली में निहित है।

10. मानव सभ्यता के विकास काल से ही भारत अध्यात्म, शांति और मानवता के प्रति प्रेम का केंद्र रहा है। अध्यात्म हमारी जीवन शैली में है। वेदों और उपनिषदों जैसे हमारे प्राचीन ग्रन्थों में भी अध्यात्म और विश्व शांति की शिक्षा दी गई है। हमारे महान संतों और तपस्वियों ने अध्यात्म, योग और ध्यान को लोकप्रिय बनाया है।

11. हम भगवान शिव को भी ध्यान मुद्रा में देखते हैं, तो भगवान बुद्ध और भगवान महावीर को भी ध्यान में पाते हैं। युवाओं से मेरा आग्रह है कि आत्मिक विकास और निजी उन्नति के लिए भारत की इस प्राचीन परंपरा का अभ्यास करें। देश दुनिया का आने वाला भविष्य निश्चित ही स्वामी विवेकानंद के सपनों को साकार करेगा और तब हमारे क्षमतावान युवाओं की बड़ी ज़िम्मेदारी होगी। इसी के साथ युवाओं और देशवासियों के समावेशी विकास में ब्रह्मकुमारीज संस्था की भी बड़ी ज़िम्मेदारी होगी।

12. हम वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति के प्रवर्तक राष्ट्र हैं। हम भारतीय सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार मानने वाले लोग हैं। इस वैश्विक परिवार में आज पूरी दुनिया मान रही है कि भारत अग्रणी भूमिका में है। ऐसे में हमारे नागरिकों व हमारे नौजवानों का दायित्व बढ़ जाता है।

13. हम दुनिया को क्या नया दे सकते हैं, क्या सीख आज के समय में दे सकते हैं, इस पर जब हम विचार करते हैं तब मैं सोचता हूँ कि भारत दुनिया को अध्यात्म विज्ञान का उपहार दे सकता है। हम दुनिया को सामूहिकता के साथ कार्य करने की संस्कृति दे सकते हैं।

14. कोरोना के समय में हमने देखा है कि कैसे दुनिया के बड़े-बड़े विकसित देशों ने हिम्मत खो दी थी। भारत ने उस विपरीत समय में सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन किया।

15. हमने दुनिया को एकजुटता और सामूहिकता का संदेश दिया है। अहिंसा, शांति, सद्भाव और एकता के मूल्य दुनिया हमसे सीखती है। लोकतंत्र, वैचारिक दर्शन और विज्ञान में हमने सदैव विश्व को रास्ता दिखाया है। मैं समझता हूँ कि भविष्य में भी हम दुनिया को दिशा देंगे।

14. इस विज़न के साथ हमारे होनहार युवाओं को सामाजिक-सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक सोच पर काम करना होगा। वैश्वीकरण के इस युग में युवाओं को नैतिक मूल्यों और आत्मबल के साथ तेजी से बदलते समय में अपने आपको अपडेट रखना चाहिए। अपने आप को समर्थ बनाना चाहिए।

युवा प्रत्येक देश की सबसे मूल्यवान संपत्ति होते हैं और हम तो इस मामले में बहुत सौभाग्यशाली हैं। भारत विश्व के सबसे युवा देशों में शामिल है। हमारी 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। हमारे युवाओं और मानव संसाधन का अनुकूलतम उपयोग होता है तो भारत विश्व में नेतृत्वकारी भूमिका में होगा इसमें कोई दो राय नहीं है।

15. भाइयों और बहनों, इस वर्ष हम अपनी आज़ादी के 75वें वर्ष को 'अमृत महोत्सव' के रूप में मना रहे हैं। इन 75 वर्षों के दौरान हमने जो तरक्की की है, जो उपलब्धियां हासिल की हैं, यह अमृत महोत्सव उन संकल्प का पर्व है।

मगर इसके साथ ही मैं समझता हूँ कि यह अवसर हमारे लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि हम किस तरह अपने राष्ट्र की उन्नति में भागीदार बन सकते हैं, हम किस तरह अपने देश की उपलब्धियों में अपना योगदान दे सकते हैं।

आने वाले 25 वर्षों बाद भारत जब अपनी आज़ादी की 100वीं वर्षगाँठ मनाएं, तो उसमें हमारे कार्यों की भूमिका हो, उसमें हमारा योगदान हो, हमें इस दिशा में आगे बढ़ना है।

16. जब हम कहते हैं कि 21वीं सदी दुनिया में भारत की सदी होगी, जब हम कहते हैं कि भारत दुनिया का नेतृत्व करेगा; तब हमारा उद्देश्य एक ऐसे भारत का निर्माण करना है; जिसमें हर नागरिक स्वस्थ हो, युवा स्वावलंबी हो, महिलाएं आत्मनिर्भर हो, हर बालक और बालिका शिक्षित हो, किसान और श्रमिक खुशहाल हो। एक ऐसा भारत जहाँ समावेशी समृद्धि हो, समावेशी संपन्नता हो।

17. हमारे सपनों के ऐसे स्वर्णिम भारत का निर्माण तभी हो सकता है जब देश का हर एक वर्ग, हर एक व्यक्ति पूरी निष्ठा के साथ आगे बढ़ने का सामूहिक प्रयास करे। राष्ट्र नव निर्माण के इस महायज्ञ में प्रत्येक संस्था, प्रत्येक नागरिक को अपने राष्ट्रीय दायित्वों और कर्तव्यों का निर्वहन करना है।

18. आजादी का अमृत महोत्सव वास्तव में एक ऐसा विजन है, एक ऐसा विचार है जो देश की अंतर्निहित शक्तियों को राष्ट्र निर्माण के लिए काम में लाती है। यह सबको जोड़ने का मंत्र है, एक समावेशी विचारधारा है जिसका अंतिम लक्ष्य देश के स्वर्णिम भविष्य का निर्माण करना है।

19. हमारा हर कार्य राष्ट्र के लिए समर्पित हो, हमारे सभी प्रयास राष्ट्र हित की कसौटी पर कसे जाएँ और हम एक नए संकल्प और नई ऊर्जा के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान करें।

20. इन्हीं आशाओं और अपेक्षाओं के साथ मैं यहाँ उपस्थित ब्रह्मकुमारी के बहनों और भाइयों तथा समस्त देवियों और सज्जनों को एक बार पुनः नमस्कार करता हूँ। मैं ब्रह्मकुमारीज संस्थान को अपनी अनेक शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद, जय हिन्द।